

कौस्तुभः प्रनमः ॥ नैव द्य ॥ ॥ याम् ॥ महिषाश्वयनमः ॥
मृध ध्यान ॥ कृता कामहिषात्रुर्दण्डयानि रुयानर्ककाल
यागधर्पदृष्टध्यायदक्षिणादिष्टानि ॥ उमायदण्डरुसायय
नाविकथमहिषाश्वयनमः ॥ उँ माँ मीँ उँ माथनवा ॥ नि
वद्य ॥ अवाहनादि ॥ ॥ नैमत्यः प्रताश्वयनमः ॥ श्र
धध्यान ॥ न कृन्नरुसवात्रुर्नीलात्यलदलप्ररुं कृयाणि

यानिमस्य नं यि वक्रजाह्नसंष्टयः ॥ ० ॥ निश्चानरा ॥ ३ ॥ कौं
॥ नेमत्याय स्वप्नहस्ताय नमः ॥ नेवद्यः ॥ ० ॥ वक्रजा ॥ म
कनानाथ नमः ॥ अथ ध्यानं ॥ नागयाग धनं इह वृत्तानं न
निदिगुहं गगनकषव नं ध्याय वक्रजां सकनास नं ॥ ० ॥
निश्चानरा वक्रजाय यागहस्ताय सकनात्रयाय नमः ॥ ३ ॥
दौं दौं वक्रजाय नमः ॥ नेवद्यः ॥ ० ॥ वायुवृत्तानि ॥ आ

य नमः ॥ अथ ध्यानं ॥ आद्यानं हविगस्त्याय विलाहं धः
ऊषावर्णं यागं नंदं कृतानां हविगस्त्याय नमः ॥ ३ ॥ वायु
वृत्तं हस्ताय यवनायि नमः ॥ ३ ॥ दौं दौं दौं दौं दौं
नमः ॥ नेवद्यः ॥ ० ॥ कृत्तं ॥ मद्याय नमः ॥ अथ ध्या
नं ॥ कृत्तं नमः वमासीनं सर्वसर्वं यनिगुहं स्वदुर्गं चयं
मजाहस्तं उरुना स्यायुति स साधनं ॥ ० ॥ निश्चानरा ॥ नेवद्यः

ॐ जगदादस्ताय धनाधिक्यमवा ब्रूहाय नमः॥ ॐ सौ -
सौ सै क व नाय नमः॥ नैव द्य॥ ०॥ ॐ ण न॥ वृथा आथ
नमः॥ नृथ ध्यान॥ ॐ ण न वृथ रु वृदं विष्णु लं चालयाः
विष्णु स न वृथा ण दा न रं रं रं मोलि वि ला च नं ॐ ण नायः
विष्णु ल ह सा थ रु ता धि य थ न मः॥ ॐ दौ दौ दौ ॐ ण ना
य न मः॥ नैव द्यं नमः॥ ०॥ नृथ स दा य न मः॥ नृथ ध्यान

अनन्यपुत्राका दं रु ना स य य नी यू तं वि नू ना म य ती का
सं कृ म्मी वृदं य यू उ थ न॥ ॐ ति ध्यान॥ ॐ ॐ ॐ अन ना य
व क रु सा थ न मः॥ नैव द्य॥ ०॥ ॐ दौ दौ दौ वृथ नै दं सा आ थ न
मः॥ नृथ ध्यान॥ यी नं यी न व उ वी दं वृथ नै व उ ना न नै
दं स वा द न स मा यू कं सा द रु रु क म णु लं॥ ॐ ति ध्यान॥
ॐ ॐ ॐ ॐ वृथ न य यू रु सा य न मः॥ नैव द्य॥ ०॥ धि न यः

दाव ॥ न का सी ति का वृथा या वः ॥ उ न्द वा मु नू ॥ १० ॥ अथः
वा ना ग वा मु द्द वा ॥ दू जन या थ ॥ उं गि र्वं ति न न मः ॥ ११ ॥ श्री
क ण्म य न मः ॥ उ क न गाय न मः ॥ गि मूर्त्ति य न मः ॥ १२ ॥ वः
मी ण न ना य न मः ॥ १३ ॥ ति ॥ पू जन ॥ अथ या व ल र्व ण दा थः
अ मु म रु ण ॥ य थ ण वा न दा थ ॥ ध न ध दा व ल क ति द्द य
क ॥ अथ वा ॥ अथ ल न भा ल दा ति दा र्थ ॥ अ न स मू ल ॥

सुखि क था या व क ति द्द व न न या व ॥ था यु य ॥ पू जन
मू ला मु ण ॥ ध न ध दा व ॥ उ का सी ति स य थ ॥ पू न वा दा व
आ ॥ द ति या थ ॥ या उ थ ॥ वा न ह्या ग वि थ ॥ या न के व थ
मी स द्द व क म ॥ उ क रु क द्द धु क द्द ॥ अ म द्द र्व ल स र्व
उ मूर्त्ति य न न य क ति द्द वा या थ अ मु म रु ण ॥ क ति
दा थ सु खि वा द य द र्थ ॥ सु खि वा द न द्वा न क य क ॥

५ का सीतिया वं कुलिया का नन थका ० का वन जव जंम
ला या का सना घा वक यक ॥ वा सुया या का थाल रा ला ॥
वक ॥ घा व सक स्मी न न ल ॥ म नु ॥ ३ ३ क व वा य ३ म
नु ॥ ध न व द व सा नि ग्रा दू नि वि थ ॥ द धा व लि ॥ यू ३
॥ ऊ ऊ मान टां नृ नि स र व वि थ ॥ आ सी वी द ॥ ध न रुं घा न
क वि वि ॥ ३ ॥ त नां या द स्का य न ॥ क - ल स घु ठ ॥ ५ ॥

द धा कि ग वी ॥ य ३ नार्थ ल र व द द द द द ल नृ क त ॥ ॥
यू व व ल्या स ॥ दि ष्ठा न यू ऊ न ॥ मू ल क ल स ॥ नृ नि का ३
३ ॥ गि ऊ ल ग यू वा घु ठ ॥ ३ ॥ थ ३ नार्थ दि थ ३ ॥ या ध ल
आ हा गि ऊ ल कं स क ल लि ठि ३ ॥ वी स लं द सा म सि नि
ध न ग यू वा स थ ३ ॥ लं का य व द य क ॥ य नि मा न क व
१ मं स ३ मं स ५ मं स १ न ति ५ ऊ ऊ मान या नृ नृ क म न ॥

द्वादश लक्ष्मणकथाय ॥ १॥ ॥ ध्यायाथ ॥ वृत्तन दामयाय ॥
 लं यथ ॥ उदाय यथ ॥ २॥ ॥ नृत्यासि ॥ वृत्तन दामयाय ॥ ३॥ ॥
 नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥ ४॥ ॥ नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥
 नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥ ५॥ ॥ नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥
 नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥ ६॥ ॥ नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥
 नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥ ७॥ ॥ नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥
 नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥ ८॥ ॥ नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥
 नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥ ९॥ ॥ नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥
 नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥ १०॥ ॥ नृत्यासि ॥ नृत्यासि ॥

[illegible]

[illegible][illegible]

दा ल॥ ॐ मरुद सव दारुद यूसा ककुदि ता वद॥ अगु मरु
स्मिता कृशान यावच्चार्क मदनी॥ ॥ र्यकुलि॥ ॐ मरु
ताथ नमः॥ अथि वहा व॥ ॐ अथ द व स न ति स्मादि ता मया
ॐ अगु मरु स्मिता कृशान यावच्चार्क मदनी॥ ॥ र्यकुलि॥
ॐ त्रिकादा द वाथ त्रिकाथ नमः॥ अथि वहा ल॥ ॐ त्रिका वि
कदा व द्य॥ सिद्धि मुक रु ल पद॥ अगु मरु स्मिता कृशान याव

च चार्क मदनी॥ ॥ दा न॥ पु रु ना॥ ॐ श्री नि वि षु ता थ पु र्ण
थ नमः॥ अथि वहा व वा द्य॥ पु र्ण त्वं व म दा द व सर्व स दा ह ल द
नी॥ अगु मरु स्मिता कृशान यावच्चार्क मदनी॥ ॥ ध्वनं
दा व॥ य ध्वनं य दा व ना ठी संधान या थ॥ आ कृति वि थ॥
था व थ व म न॥ ह्या ग॥ ॥ ध्वनं न माल का सानि क॥ पु स्मि
क॥ आ कृति वि थ॥ ॥ संपूर्ण॥ य उ मा न मृ दि सरव॥ ६

वसु ॥ स घुनार्थि ॥ आणी द्वाद ॥ ॥ कामाना चैन ॥ ॥ ॥ ॥
नियुसा दद वल ॥ सा दस्साय विधि ॥ ० ॥ गुरु ॥ कुर्मोणि
ला द ॥ था ग रु स मान दय क ॥ ध्या द व न ॥ त्रिकान ॥ स कि
मनुज ॥ दू उन या थ ॥ ध्या द व न ॥ कुल ॥ कुनिह म ना गः
न ॥ जा व न्या स गुरु ॥ विथ ॥ था थ गि उ लखा ना ॥ रखा नाः
या वि व न मू रू क ॥ मान ॥ नाल या दू वि व न उ न ॥ व दू गिः

लाखा स दि व क ॥ न क दू य ॥ स्व वा दू य क ॥ व दू रा ग काः
॥ था रखा ना ॥ उं दू व दू क रू ना त्म न न म ॥ स धा वि क रू ना ॥
पु ॥ उं वि क रू ना त्म न न म ॥ उं दू व दू क रू ना ॥ पु ॥ उं दू व
उ रू ना त्म न न म ॥

विधुन्य क ल्य ना ॥ कू ठा वि ग ल सू य म ना रा व न य ॥ ॥
न व का द म धा स ॥ रा व न य ॥ कु मि अ धि का व ल क माल

॥ दंढादवाननर्थं ॥ १५ ॥ पूर्वसयीतवसा दक्षिणसकृन्नवा ॥
यधिमस्य नवा ॥ १६ ॥ उरुननकवा ॥ मयास्य नवा ॥ १७ ॥
यादियथालारुवाननर्थं ॥ १८ ॥ धनविधिनवाननर्थं ॥ १९ ॥
नवकाटयादयाथविधिः ॥ २० ॥ नवकाटद्वयाचकं ॥
वाहानया, नूटदं नूटनं ॥ २१ ॥ ॥ नित्यादविधिः ॥ २२ ॥
॥ ननामणुयणायविधिः ॥ २३ ॥ वसावान, वसाचकं ॥

यं सा च कं रा द व या न न क म न स थ द र्भ ॥ १ ॥ स चार्ध
 ॥ गु न स वा स क र्म स थ या द र्ध या थ ॥ आ स न ॥ य य
 हा उ न ॥ अ द्या दि ॥ सि डि व रु कि या र्भ र्था दि ॥
 गु न स वा स ॥ आ सा दि नि ॥ नि त्री क ॥ दि व रु स र्था न
 ॥ मृ रु म रु ॥ आ (प्र या दि म थ्या न वा द्या थ ॥ म रु ॥
 डे डू मृ सा थ रु ॥ भ व वा न र्थ न म रु ॥ डे डू द द या

अनमः॥ वलिविथ ॥ अरु वरुं गन ॥ अरु वलि ॥
कुरु मरु वरुं कमरु गन ययिमरु थागिनिमरु ॥
मारुक ॥ असिनारु ॥ अरु कादि ॥ लोकराल ॥ वरु
सथिथागिनि ॥ अरु नादि ॥ लोकराल ॥ वरु
दीय ॥ जाय ॥ अरु ॥ यूरु वरु दिगयधिमादन त्यादि ॥
वलिविसरुन ॥ वलिसरु अरु नयावानरु अरु थान

सदावक ॥ ॥ अरु वलिवरु लोकराल ॥ अरु वरु
यूरु नरु का मरु नरु जाया यरु थान ॥ अरु वरु
मरु सयूरु नरु या यरु थान ॥ अरु वरु नादि ॥ अरु वरु
दा ॥ ॥ अरु वरु नादि ॥ अरु वरु नादि ॥ अरु वरु
अरु वरु नादि ॥ अरु वरु नादि ॥ अरु वरु नादि ॥
अरु वरु नादि ॥ अरु वरु नादि ॥ अरु वरु नादि ॥
अरु वरु नादि ॥ अरु वरु नादि ॥ अरु वरु नादि ॥

नायकः॥ उवविर्नवलक॥ वक्ताकथेना॥ यूऊन॥ उँ
वक्ताननमः॥ ०॥ खववलक॥ विक्ता॥ यूऊन॥ उँ वि
क्ताननमः॥ ०॥ थवमाधिव॥ यूऊन॥ उँ दोंदों गिवा
थनमः॥ ०॥ मूर्मिकयालीसादि॥ अस्तिनामादि॥ द
उकादि॥ ति॥ उँ नकजाथनमः॥ ०॥ लुति॥ मनु सर्व
ना॥ गस्थानमः॥ ०॥ तिदूऊ॥ मनु॥ अस्तिददवतस्थान

मः॥ सा नी॥ अथविधि नमः॥ यमयविधिद्वयी॥ ०॥
इति या मनु यद्यायामवावक॥ डिमवुक॥ १॥ ॥ ॥ ॥ ॥
सदं गृवावक॥ १॥ वदिनक॥ यविनीद्वयी॥ ॥ ॥
यद्वयी॥ ०॥ स० नडिमयक॥ १॥ वदिनक॥ १॥ दं गृ डिः
क॥ १॥ अहानावया॥ स० नडिमयक॥ १॥ वदिनक॥ १॥ दं
॥ गृवाक॥ ६॥ अहानावया॥ अथ॥ मनु यमा० दं यमाव॥

वाग्रासयकथयकमाला०॥ ॐ निमंतय विधि॥ ०॥
नभाप्रिकंतयाउस्मायनविधि॥ ०॥ सुगार्ध पुनकः २२
मयादार्ध॥ आसन॥ पुनस्मानन॥ ग्रासादिरुतपुयादि
आत्मयुजा॥ काकमदनडादवाचन॥ धंठिलिस॥ निः
वीकलादिपुतसस्मानन॥ अमुषताहणयुजा॥ कामा
नापुतुतुतनासाक॥ नभावनवन॥ याविनवृत्तय

उक्तमध्यायकास्यमध्याह्ननयंश्च॥ ६॥ पुडाअमु
मनुजा॥ काद्वदुक्तमवचानर्थ॥ मानसास्यमा॥ ०६॥
जाय॥ धकावदासलवयालदणसाथ॥ हिंघुमहिंघु
वैदुमी॥ ०॥ द्वागाल॥ कसलवहिंघु॥ मस्यनिदाकाः
वामंतदिनिविद्वक्तु॥ धनलुकालमहिंघुमदरुय॥
॥ ६॥ दनपदाभन॥ निहृ॥ पुनग्रासादिपुतपु

ऊ। नून धु ध्या। त्म यूजा। निनी कनादि, वहुसंस्कार
५॥ नृसुखत (इन यूजन) ॥ मूलवत (इन यूजन) ॥
मात्रासु (धनुसुडा) ॥ नृसुनवाद्यायदा विन्यु, आ। ये
यादि, मथा नृ ॥ नृथः दूतवलि ॥ क० ॥ वदूक ॥ गन ॥
या गिनि ॥ ताकमहा वलि ॥ धृयदीय, जायस्का दूत
विसर्जन, वानह्यास्यं थान सदाथ ॥ ॥ कलसयूजा

याथ ॥ कसमगुय कान कलसयूजा याथ मजीतार्थ
याथ धृदाव ॥ कंय नूटया ५ धाव दा धाय रुवा (जाय)
ऊलंयव, उहायव, वधुवत रुक, नृद्यया गलंखन
नृसुनहाथ, ह्याया म्रान, हदयादिन, (ग) वाननवन
नमूटयास्यं स, विद्या, नीतिन, सुस्मि कवाथ, वं विन्यु
हूत रुतवर्क ॥ यूजन याथ, उंनं हा रुडा, ज्यानि

का. पूर्ण ॥ ॐ कौनत्राय नमः ॥ ॐ कौरुद्राय नमः ॥
 ॐ कौक्याय नमः ॥ ॐ कौविकाय नमः ॥ ॐ कौपूर्ण
 य नमः ॥ हृदयादि संयुक्त आवाहनादि ॥ ५ नमो
 ॥ ॥ तत्ता विस्रकम्पौद्रजा ॥ अश्वनाथीनर्मदा ॥ ॐ
 कौ विस्रकम्पौद्राय नमः ॥ आस ॥ ॐ कौ विस्रकम्प
 नमः ॥ ॐ कौ विस्रकम्प नमः ॥ ॐ कौ वीवी वृक्षिण्यो वि

स्वक स भ न म ४॥ उँ दौ वि स्व क र्म नं रु द या थ न म ४॥ उँ
त्यादि धि न य गिर वा क व थ न रु रु या थ श्री मू स्था थ ख ठः
इ मा वा झ य झ मु डा य ॥ व ला रु न दा व अ ट वि स र्त न या
दा व ॥ च उ मान सी क न मी अ ट बाल व ह्रा थ स्व सि वा क
य ठ य नै दा दि न था व थ ॥ आ प्र या दि म ध्या र्ज ॥ न बाः
दि रु मूल र य ठ इ न मा वा झ र्ज दू झ ॥ धि न हा न वा क ॥

ॐ ह्रीं निर्विघ्नं यस्तु कर्मणि कुलं शयाद नं शुक्रायाव
काश्चिद्दत्ता नव तावन्वीशस्मिन्नीरुद्र ॥ धर्मं अग्निं कुलया
दयाथा इमां ॥ ० ॥ वा मं लुल वयादस्य नं कुलुदत्त ॥ ० ॥
दशवलि ॥ कमस्य विथ ॥ विदव ॥ अहिता इति हतु
कादि लोकपाल वृक्षाद्यादि ॥ चवृष्टि ॥ अजनादि ॥ दद
यादिवा ॥ धृप दीय जाय ॥ सावे दकिना वलि विसर्ज

न ॥ विरुज नयुज न ॥ दकिना दान ॥ कलस विसर्जन
॥ उजमान ॥ असिर्वीद ॥ अहि मय ॥ सगना थि काणी
वीद ॥ अग्नि कुल थं लुलिया दस्त यन विधि ॥ ० ॥
न तावतु द्वीव तावत्ताथ विधि ॥ वं ॥ थ वतु सि ॥ थ ॥ थ ॥
ई दि लि सि ॥ आ ॥ थ वं ॥ न त सि ॥ थ ॥ थ ला स सि ॥ रु
सि ॥ क पी व ता यं न वृ था व ता व ल अ वि थ वि स्था थ ॥

धन ना व ७१॥ विष्णु लय यिय य नाय का य द वा स्य ल
३ कु क्त्या १४ मृदा ना ज या १॥ द्या दाला ३॥ धन क र्ण द्रु
या १॥ द्या अं तु लि १२ कु द्या क ४ ल क्ता द्रु नि या १॥ यथा व
०॥ दूष्णी दि द्धि य य ना का ॥ ११ ॥ थ कु लि र व थ न ॥ द व द
इ थ कु लि ॥ अ व र्ण कु लि ॥ नू य स्या न सि र्वा कु लि ॥ अ शा क
सि अ य ॥ र व य स्या न सि उ ड्ड ॥ ना व ७१ क म ॥ धन इ ना ॥

अथः क ल स वि द्रु ॥ दू र्ध व कु क्त क म व ७१ ना या त स दि
न ॥ न क विष्णु ल ना व ७१ य द्वा इ द्रु क म द काल ॥ न क य स
क न य व द ॥ स न य द्रु क न इ ना ॥ धन स उ ड्ड काल य र्ण
उ त्प ल वा थ ॥ दू र्ध व आ धन ॥ ० ॥ आ प्र य या ॥ न क ७१ कि ॥
दा कि न क क उ म द ७१ ॥ ह गि या वि द ७१ ॥ न न प ति स्य न
य न ७१ ॥ उ ड्ड व द या ॥ उ य मा लि ॥ न ना या य र्ण स र व ॥ द

२५ अष्टांगसूत्रस्योपनिषद् पादसंक्षेपनविधि

3267

ASHA ARCHIVES

६६

११/६

क्रि० ॥ ० ॥ सुनेमल्य ॥ शुकरवक्त्र नेमल्यद क्रि० ॥ विंदु
 कया लक्ष्मि ॥ नेमल्ययधिम नीलचक्र श्रवण नायधिम
 ॥ वरुणाश्चतनाम ॥ पातत्रिणिधूल चक्रकण
 क्रि० ॥ सामवदचक्रचक्रा द्वाययस्यामगदा ॥ सनध
 नीश्चतवन ॥ नेमल्यरा ॥ गगना माहालक्ष्मीकृमउत्पल
 ॥ वायव्यरा ॥ गगनाश्चतकलस ॥ नेमल्यरा ॥ गगना ॥ जमः

[illegible]

७
 ध्वजिद्रभास्यं कलसवाथराणि विवकलसया विष्टुलभास
 किं कलसया उत्पलभा उभा ॥ इद्रणी ॥ १ ॥ लकी ॥ नावार्थ
 ॥ ० ॥ ध्वजालिद्रसा निद्राम ॥ ना विमयाथ ॥ ॥ अरु
 वठगी ॥ कनाम सुसयाथ ॥ इद्रुद्रात्मयूजायाः
 य ॥ ॥ उं वलासाथ नमः ॥ आधावादि मूद्रयूद्धि क
 यास्य ॥ उं नमस्तुद्रयद्रमहायाष्टयनासाथ दः

नवदे ४
 दयाथ नमः ॥ इद्रादि वठद्रमा वा द्रुसं यूद्रा नकापि
 काशी ॥ अरु न ॥ खननरी यूद्रा ॥ १ ॥ सवन ॥ ३ ॥ कूटन
 ॥ ५ ॥ स माद्रु न ॥ ६ ॥ लयन ॥ ७ ॥ वद्रुषाथ ॥ ८ ॥ वद्रु
 कर्म ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ स सा न कृषु ॥ धनलि मजी नाथी सनाः
 यं जगु या द्रु ॥ वा द्रु नमः याथ ॥ कं विद्रा मयाथ सा नि
 क विवि स मा द्र ॥ ० ॥ ध्वजं ॥ यं द्रा व द्रान उद्रमानः

ननु जगदिना ॥ आगिनिनिकरु जगदिना ॥ धनधुंदा
व निवहनादिदीयलाहनका ॥ आसपूवीहनाधन
कर्मचिन्नना ॥ हयाहनाथ ॥ लानसामहकमार्जनया
थ ॥ जौये ॥ कौवे ॥ बठकलस ॥ हलादियुजा ॥ वीनकलः
स ॥ वतीसी ॥ जूधावायु ॥ हकावसकान ॥ यठह ॥ मावा
प्र ॥ धन ॥ थानिसुडा ॥ जय ॥ कौवे ॥ ॥ समयया

॥ उयवासथायनानयाथ ॥ ॥ ह्निअदुवासन
दिवि ॥ ॥ ॥ यातमानयाथ ॥ ॥ निचदवाचनया
थ ॥ ॥ निमिलिकयाथ ॥ ॥ सुयाद्य ॥ यादाद्य
कात्य ॥ गुनुमान ॥ सामान्यास ॥ लरुवलि विः
थ ॥ ॥ उंकोकययालायवलि गृह २ स्वादा ॥ ॥ ॥
उंको सर्वरु लयावलि गृह २ स्वादा ॥ ॥ उंकोकाथवलि

गृह्ण २ स्वादा ॥ ३ ॥ मंगनव नथ वलि गृह्ण २ स्वादा ॥ ३ ॥
लं वं ट को य वलि गृह्ण २ स्वादा ॥ ३ ॥ सो सर्वथा गि ॥ १ ॥
नि। स्था वलि गृह्ण २ स्वादा ॥ ३ ॥ भन वलि विथ ॥ आवाहना दि
मुहा दधी न ॥ जा व ॥ स्व स्व वी ड न ॥ सा न ॥ यू वं द दि। ण य
धि भा रु व धि वा त्या दि। उ त्वा ॥ अ अ ण वि स र्ज न ॥ वा थः
थान स वा क लं दाल लि व वा थ ॥ १० ॥ गि ह न व लि वि धि ॥

॥ ० ॥ यथ मा न क व लि ॥ ॥ ध लि व म ण य य क लि का
न स र्वं मा र्ग ना थ स र्ग ना र्व दा व म ण य मा ध न नि च
द ना दि या द ण गा उ न गु ण न व का व रु र्म का च ॥ ४ ॥
दा य ला द न का ॥ अ अ य उ न य द ॥ अ अ ण मा ण या दि
म आ नं दं वि नं वा च्छा थ ॥ दू न क र व दू क न न ॥ १ ॥
य ति था गि नि ०० द्वा दि द न का दि व व ण णि अ ड वा ॥

दि श्वत वलि विथ धु दा व न नका सी धा न स वा थ ॥
ॐ निमल य सा धन वि थि ॥ ० ॥ अथ य श्रुता य सा
धन ॥ गाय त्रि लोका द्वा र ॥ म ल य ॥ ॥ त ता व ड द्वा य यू
ज न या थ ॥ ॥ सा नि ता न ल दि य ति स्ता ता न ल न ॥ सा
वा अ स य श्रु ॥ आ लो क न वि दि द्वा य यू ज न ॥ ० ॥
अथः पूर्व द्वा य यू ज न ॥ ॐ द्वा सा नि ता न ल आ य न म ॥

ॐ द्वा सा नि ता न ल मू र्ध न म ॥ ॐ द्वा सा नि ता न ल च
न म ॥ द्वा वा यि य ति ॥ ॐ द्वा न दि न न म ॥ ॐ द्वा म द्वा का
ल च न म ॥ ॐ द्वा र्ग ल य न म ॥ ॐ द्वा उ म ना थ न
म ॥ ॐ द्वा कू त द्वा य न म ॥ ॐ द्वा रु ल का य न म ॥
ॐ द्वा रु व ल का य न म ॥ द्वा न ल र वा यी ॥ ॐ द्वा वृ द्वा
ॐ द्वा धा ता य न म ॥ ॐ द्वा रु ना य न म ॥ वि ल ल ॥ ॐ

दौ शोभाय नमः॥ ॐ दौ श्री गाय नमः॥ ॐ दौ अक्षय
 वृद्धाय नमः॥ ॐ दौ कव्यमाह धनी नमः॥ गाहा
 मः॥ ॐ दौ गणयनय नमः॥ ॐ दौ महालक्ष्मी नमः॥
 ॐ दौ सधर्मा नमः॥ उडीदुम्विद्वि॥ ॐ दौ यनयुतः
 ॥ ययुर्वदकाथ नमः॥ वायुनत्वदुधनाधिदवताय
 सानिना नमः॥ धियथ नमः॥ ॐ दौ वकायद्वरुद्वरु॥

[illegible]

नमः॥ उँ द्रौ यानि स्वात्मनः॥ च नमः॥ द्वा वा वि यानि ॥
इँ द्रौ द यो नमः॥ उँ द्रौ व र्ण य नमः॥ उँ द्रौ ग ण कानु मः॥
॥ उँ द्रौ का षा की नमः॥ उँ द्रौ श्रु थ र्व व दाय नमः॥ उँ द्रौ क
लि द्र म थ नमः॥ उँ द्रौ क र व ला का य नमः॥ उँ द्रौ स
य ला का य नमः॥ द्वा व षा र्वा या ॥ उँ द्रौ वि ष्णु व नमः॥
॥ उँ द्रौ श वि ता य नमः॥ उँ द्रौ श्रु णु मालि न नमः॥

वि श्रु ल ॥ उँ द्रौ वा द व नमः॥ उँ द्रौ क र व नमः॥ इँ
द्रौ च व र्ण य नमः॥ उँ द्रौ स व र्ण म दाल की न
मः॥ ना दा स ॥ उँ द्रौ ग न य व य नमः॥ उँ द्रौ म दाल
ल की नमः॥ उँ द्रौ स य स्य ता नमः॥ उँ द्रौ द म्ब निः
क ॥ उँ द्रौ व र्ण म द वा य डे प व का य ना ना ये ना वि
क दे व ना य म्मा ना ग्ना त न र्वा ये नमः॥ उँ द्रौ ग दा य इँ

ॐ दौ लं सधा आ नाय यधि मवक्रा थयि श्री गता थव
क्रा धिद व नाय व न ना न ना य न म धा ॐ दौ या धा य
कू रु द्या य ना का स्व न व ण्ण यधि म र म्मा वा रु ना दि क
कला म् ॐ नित्य धि म दान य द्वा ॥ ३ ॥ ॐ नमो भगवते
उ न दान य द्वा ॥

क३४

कसवभायनरुण-२००६ नाथपदनापरुव रुमयनलव भावसुद ४४









